धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

मार्च 2008

अन्धेरे पक्ष

आपकी ज्योति में हमें अपने अपराध दिखाई देते हैं।

जीवन प्रसंग

चण्डीगढ़ में माता पिता व्रत

चण्डीगढ़ कोचिंग सेंटर में माता पिता दिवस

कल्याण सत्संग

ऐ नेकों की सोसाइटी आदर्श तू समाज है। टेक

नीच रागों का दमन, उच्च भावों की लगन;
देवगुरु का प्रेमपन, यकता तेरा मेराज है।1
जगत् से मेटकर गुनाह, करके झूठ को फनाह;
सत्य और हित को दे पनाह, देवत्व का लाती राज है।2
तू बरकतों की कान है, नायाब तेरा दान है;
सब से अनोखी शान है, हिन्दोस्तां की लाज है।3
मरते हुए बचा दिए, वीरान घर बसा दिए;
मगरूर सर झुका दिए, बेमिसल तेरा काज है।4
अपनी गठन में जान में, शिक्षा के इम्तहान में;
और काम के मैदान में, सानी न तेरा आज है।5
इन्जन है तू सुधार का, रिश्तों के कुल बिगाड़ का;
दिल के क्षई बुखार का, तू बेखता इलाज है।6
है आला तेरी दीक्षा, है रूह की तुझ में रक्षा;
विज्ञान मूलक शिक्षा, हितकर हर इक रिवाज है।7
है बढ़ता जाता रात दिन, तेरा अलम के सर पै ऋण;
है देना बहुत हि कठिन, जो मूल का ब्याज है।8

धर्म जीवन

खण्ड 20 अंक 3

मार्च 2008

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

अन्धेरे पक्ष

क्या कुछ ऐसी बातें हो सकती हैं कि जो मनुष्य को आंखें रखकर, बुद्धि रखकर, अच्छी शिक्षा प्राप्त करके भी नज़र नही आती, या उसे उनकी कोई समझ नही आती? जी हां, ऐसा बहुत कुछ है जो मनुष्य को बहुत सी योग्यताएं रखकर भी नहीं दिखाई देता।

जैसे एक-एक पशु, गाय, बैल, ऊंट को आंखें रखकर भी, कुछ बुद्धि रखकर भी स्कूल का पता नहीं चलता, कि वह क्या चीज़ है? यहां क्या काम होता है? किसी कारखाने का पता नहीं लगता, किसी मशिनरी का पता नहीं लगता, किसी अमीर, गरीब, डाक्टर, इंजीनियर या वकील को नहीं जानता। किसी चोर, डाकू, महान वा उच्च हस्ती को नहीं पहचानता। कागज़ और 100, 1000 के नोट की उसके आगे कोई कीमत नहीं, इस प्रकार और कितने ही और पक्ष हैं, जिनमें मनुष्य को भी पता नहीं लगता कि वह उनके बारे में अन्धकार में है।

आद्वितीय आर्विभाव देवात्मा का दर प्राप्त करके साधारणत: मनुष्यों का बहुत भला हो जाता है, उन्हें मिथ्या वा झूठे धर्मों के बारे में पता लग जाता है, वह मिथ्या देवी देवताओं के बारे में भी कुछ न कुछ समझने के योग्य हो जाते हैं, वह मोटी बुराईयों से बच जाते हैं, सामाजिक, आर्थिक और परिवारिक पक्ष में बेहतरी आ जाती है, परन्तु फिर भी बहुत कुछ ऐसा रह जाता है, जिसके पक्ष में मनुष्य अन्धेरे में रहता है।

मोटे तौर पर चार पक्ष हैं, जिनके विषय 98 प्रतिशत या इससे भी अधिक गिणती में मनुष्य अधिकतर अन्धेरे में रहते हैं।

1) मनुष्यों को दूसरे मनुष्यों के बुत्त, शरीर, शक्ल, विद्या, पैसा, पदवी आदि तो दिखाई देते हैं, परन्तु उनके गुणों, महानता सम्बन्धी कोई सोझी नहीं होती। महान व्यक्ति बे पहचाने ही रह जाते हैं। गुणों के प्रति मनुष्य अन्धे ही रहते हैं, वैसे तो पशु, पौधों के गुणों का भी मनुष्य को ज्ञान नहीं, मनुष्य के गुणों की पहचान बहुत कठिन है। यहां तक कि पिता पुत्र को, पति पत्नी को, नौकर मालिक को भाई भाई को आपस में गुणों का ज्ञान नहीं होता। इसी कारण ही सम्बन्धों में अन्याय, गन्दे व्यवहार, तिरस्कार होता है। ऐसे जुल्मों के द्वारा दुनियां नर्क के समान हो गई है।

2) दूसरा मनुष्यों को दूसरों से पाई हुई सेवाओं, सहायता, हमदर्दी और अन्य उपकार नज़र नहीं आते। बड़े से बड़े उपकारी के उपकार भी आंखों से ओझल रहते हैं। उनको धन्यवाद जुबान से देना भी कठिन लगता है। एक - एक सन्तान को सारी - सारी उमर दिखाई नहीं देता कि माता - पिता उसकी भलाई के लिए क्या कुछ करते रहे हैं। कितने भूखे रहे हैं, कितनी तंगी सही है, कितनी रातें आंखों में काटी हैं, शारीरिक कष्ट झेले हैं, फिक़र, कठिनाईयां झेली हैं। अपनी धन - दौलत उन पर वारी है, आप कष्ट सहकर भी उन पर अथाह हितों की बारिश की है। परन्तु उन्हें यह सब, कुछ भी नज़र नहीं आता। इस कारण यह रिश्ता जितना स्वर्गिय होना चाहिए था, उतना ही नारकीय बना हुआ है।

माता पिता को छोड़कर और सम्बन्धियों, दादा - दादी, नाना - नानी, बुआ, मासी, सास, बहु, पति - पत्नी, ननद, भरजाई आदि से उपकार, मेहरबानियां वा सेवाएं मिलती हैं, परन्तु उसे याद तक नहीं रहती। अध्यापकों, डाक्टरों, हकीमों, दोस्तों, मित्रों, अफसरों, नौकरों से बहुत उपकार पाता है, परन्तु मनुष्य उन्हें याद नहीं रखता।

सफर में, बिमारी में, दुर्घटनाओं में, मुसीबतों में बिन मांगे कई बार अजनबियों से भी सहायता मिलती है, परन्तु हर समय वह याद नहीं रहते। वह किसी का कुछ भी देनदार अनुभव नहीं करता।

पशुओं, पौधों, घरों के बेशुमार उपकार हैं वह भी नज़र से ओझल रहते हैं।

3) तीसरा अन्धेरा है कि मनुष्य दूसरों के दुखों, कष्टों, पीड़ा, रोगों, संकटों, अभावों, भूख, गरीबी को देखने के सम्बन्ध में अन्धकार में रहता है। दूसरों के दुखों वा हानियों के प्रति संवेदनशीलता बिल्कुल नहीं। यह दुनियां ही स्वार्थी मनुष्यों के सामने छुपी रहती है। किसी का दुख उसे नहीं हिलाता।

चौथा बहुत बड़ा अन्धकार मनुष्य का अपने विषय में है। उसे अपनी गल्ती, अपना दोष, अपनी खराबी, अपनी नीचता, अपनी कमी अक्सर दिखाई नहीं देती। दूसरों से इस विषय में सुनने की हालत में नहीं रहता। मनुष्य अकसर अपने आपको ठीक, दोषहीन और सुन्दर से सुन्दर रूप में देखता है, अपनी ओर उसका ध्यान ही नहीं जाता। वह अपने ही सजाए सुन्दरता के महल में वास करता है। यदि किसी अन्धे मनुष्य को लाठी पकड़ कर, किसी खड्डे में से गिरने से बचा ले, तो वह मनुष्य न केवल बुरा नहीं मनाता, उल्टा खुश होता है और सही राह पाने वाले को धन्यवाद देता है। परन्तु यदि कोई हितैशी उसकी गल्ती, कमी, खराबी समझाने की कोशिश करे तो मनुष्य उसको शत्रु समझने लगता है। अपने विरुद्ध एक शब्द नहीं सुनना चाहता। उसको धन्यवाद तो क्या देना था। इस पक्ष में मनुष्य सदा गहरे अन्धेरे में रहता है और सधारणतः इस अन्धेरे में ही मर जाता है। मनुष्य अपनी गल्त आदतों, नीचताओं को प्यार करता है, उनके विरुद्ध सुनना बहुत खराब लगता है। अपने आपको ही नहीं उल्टा दूसरों को खराब देखता है।

उपरोक्त चारों पक्षों को छोड़कर मनुष्य अपनी मनोवैज्ञानिक बनावट सम्बन्धी भी बहुत अन्धेरे में है। मनुष्य को यह बात स्पष्ट नहीं है कि उसके स्वभाव में क्या अच्छा और क्या बुरा है, गुण - दोष क्या हैं? मनुष्य के भीतर किस - किस प्रकार की मनोवैज्ञानिक शक्तियों का संग्रह है। वह कितनी ज़ोरदार वा बलशाली हैं? मनुष्य किस प्रकार

उनके अधीन है। इस पक्ष में अन्धेरे से भी वह अनजान है।

मनुष्य अपने परिचालक भावों के सम्बन्ध में भी बहुत अन्धेरे में रहता है। उसको कौन चलाता है वह कैसा इन्सान है? मनुष्य रब, देवी - देवते और अन्य गुरु पीरों आदि को अपना परिचालक विश्वास करता है। उन्हें ही सब कुछ करने वाला मानता है। वह इस पक्ष में अन्धेरे में है कि उसे चलाने वाले उसके भाव हैं, इस अन्धेरे में यह नहीं जान सकता कि उसको कौन - कौन से भाव चलाते हैं और कहां - कहां क्या - क्या लीला दिखाते हैं। इस अज्ञान के कारण ही जीवन की सब समस्याएं हैं। उसकी समस्याओं की ग्रन्थियाँ क्रिया शीलता के ज्ञान से सुलझ सकती है। यह अन्धेरा ही स्वैज्ञान अर्थात Self Knowledge के मार्ग में बड़ी रूकावट है।

जैसे बहुत से मनुष्यों को यह पता नहीं होता कि किस कारण मेरी सेहत बिगड़ रही है। मैंने क्या खराब खाया और पीया है, और क्या बदपरहेजियां की है, जिसके कारण मेरा स्वास्थ्य बिगड़ रहा है, मैं दुख भोग रहा हूँ उसी प्रकार मनुष्य को यह पता नहीं लगता कि मेरी किस - किस ललक के कारण किस - किस स्वभाव के कारण, किस - किस बोल के कारण, व्यवहार के कारण मेरे जीवन में क्या - क्या बिगाड़ पैदा हो रहा है। क्या - क्या घाटा और नुकसान हो रहा है। अपनी मनोवैज्ञानिक स्वैपरीक्षा मनुष्य अपने अन्धकार के कारण करना भी नहीं चाहता और न ही कर सकता है। इस प्रकार दुखों, घाटों और हानियों का शिकार होता रहता है।

कौन चिन्ता कौन क्रिया जीवन का क्या कुछ बनाती है, कौन सा सुख, कौन सा रस, मुझे क्या कुछ बनाता है। इसका आत्मिक अन्धेरे में कुछ पता नहीं लगता।

परिवर्तन प्रकृति का एक महान और अटल नियम है और वह सर्वव्यापक है। हर चीज़ बदल रही है। हमारा अस्तित्व भी इस नियम के अधीन होने के कारण प्रतिक्षण बदल रहा है, या बन रहा है या बिगड़ रहा है। परन्तु यह परिवर्तन अन्धकार में मनुष्य को दिखाई नहीं देता। हमारे शरीर की तरह हमारे भाव भी क्षण - क्षण बदल रहे हैं। हम हानि के मार्ग पर चलते रहते हैं, उसको भी देख नहीं सकते।

अन्धेरे का दूसरा नाम हानि, दुख और विनाश है। यदि हम अन्धेरे से सावधान न हुए तो हमारा नाश व हानि निश्चित है। इससे हमें कोई नहीं बचा सकता।

आत्मिक पक्ष में हर इन्सान अन्धेरे में जीता हुआ भी इस सचाई से अनभिज्ञ रहकर सन्तुष्ट रहता है, पर सन्तुष्ट रहने से बचा तो नहीं जा सकता।

मनुष्य को सदा स्मरण रखने की जरूरत है कि मैं घोर अन्धकार का जीव हूँ। इस अन्धेरे में से निकलने में ही मेरी रक्षा और मेरा हित है। आद्वितीय आर्विभाव, आद्वितीय रोशनी के सूरज प्रगट हुए हैं। उनकी लासानी अध्यात्मिक रोशनी मनुष्य के इस अति महान घाटे को दूर कर सकती है। वह मनुष्य का हर प्रकार का उपरोक्त अन्धकार दूर कर सकती है। मनुष्य को समय रहते - रहते उपरोक्त अन्धकार को दूर करने की समर्थ्य रखने वाली उक्त रोशनी को खूब जानने की आवश्यकता है। और उस सर्वोच्च ज्योति की प्राप्ति के नियमों को पूरा करने की आवश्यकता है।

आपकी ज्योति में हमें अपने अपराध दिखाई देते हैं।

जीवनदाता भगवन्!

एकमात्र आपकी ज्योति ही हमारा आश्रय है। केवल यही एक ज्योति हमारे आत्मा की शक्तियों की लीला हम पर प्रकट करती है। केवल यही ज्योति हमें हमारे उन नीच अनुरागों और घृणाओं का घृणित रूप दिखाती है कि जो अन्यथा हमें बड़े सुहावने दिखाई देते हैं और जिनका पक्ष समर्थन करने में हम एक वैश्या की न्याईं अपने दिमाग का दुरूपयोग करते हैं। एकमात्र आपकी ज्योति ही मानवता के इन भयानक शत्रुओं का असल रूप प्रकट करती है। इनका वास्तविक रूप दिखाकर आपकी ज्योति ही हमें उनसे भयभीत करती है, और उनके प्रति घृणा उपजाने के हेतु, हमें आपकी ज्योति प्राप्त करने की प्रेरणा देती है। एकमात्र आपकी ज्योति के भव्य प्रकाश में यह सर्वथा बेकार और राक्षस शक्तियां और उनकी कठोरता घटती है। आपकी पावन ज्योति के अदभुत प्रकाश में इन शक्तियों की वर्तमानता हमें लज्जित कर देती है। कितनी शान्ति हम अनुभव करते हैं, जब आपकी ज्योति इस प्रकार हमारे आत्मा के आन्तरिक जीवन को आलोकित कर देती है। जिन्हें पहले हम अपना वरदान रूप मित्र अनुभव करते थे, उन्हीं से अब उद्धार पाने के संग्राम में पड़ना कितना सुखद लगता है। जिन शक्तियों को अपना स्वामी बनाकर हमने दूसरों के अधिकारों का अनेकों अनेक बार अपहरण किया और जिन अपहरणों को आपकी ज्योति प्राप्त करने से पहले हम अपने जीवन की जीत समझते थे, उन्हीं को अब सन्मुख लाकर हम अत्यन्त लज्जा अनुभव करते और पछताते हैं। जीवन का सारा दृष्टिकोण ही बदल जाता है, जब हमें आपकी ज्योति प्राप्त होती है। वस्तुएं अपने असल रूप में प्रकट होती हैं। जहां पहले नीच अनुरागों और नीच घृणाओं को तृप्त करने में सफल होना हमें घातक अहंकार और अकड़ से भर देता था, वहां अब हम यह बोध पाकर सच्ची और जीवनदायक दीनता अनुभव करते हैं कि नीच अनुरागों और नीच घृणाओं का पथ कितना घातक पथ था।

आपकी ज्योति जो काम एक झलक में कर देती है, वह कोई अन्य वस्तु हमारी सारी आयु में भी नहीं कर सकती। मैंने देखा है कि एक बेटा जो पहले वर्षों तक अपने को ठीक और अपने पिता को गलत ठहराता रहा और वर्षों अपने जन्मदाता से फटा रहा, आपकी ज्योति पाकर रोने लगता है। एक ही सभा में आपकी ज्योति उसके आत्मा के ऊपर से अन्धकार का परदा उठा देती है। उसे वह कुछ दिखाई देता है कि जिसका उसे स्वप्न भी न आया था। उसे नज़र आता है कि वह अपने पिता के सम्बन्ध में कितना निर्दयी और कृतघ्न बना रहा। पिता को उसके कारण वर्षों तक जो दुखों और अकेलेपन में जीवन बिताना पड़ा, उसका दृश्य उसके सम्मुख आता है। वह बच्चों की न्याईं फूट-फूट

कर रोने लगता है और पिता के पास जाकर उसके चरणों में गिर जाता है, और पिता के चरणों को अपने आंसुओं से धोने लगता है। जिस कारण से यह बरबादी आई, वह अब अपने नग्न रूप में उस पर प्रकट होता है, और उस कारण को वह दूर कर देता है। पिता विस्मित होकर पुकार उठता है, "तुम्हारे जीवन में यह चमत्कार कैसे हो गया! तुम्हें यह सब कुछ कैसे दिखाई दे गया!!" पिता को हैरानी होनी ही थी। परन्तु चमत्कार तो सच्चा चमत्कार था।

एक और घटना मेरे देखने में आई, जिसने मुझे विचारों की नई दुनियां में पहुंचा दिया। एक पति जो अब बहुत दुखी है, वह पहले भी दुखी था। एक बार उसे आपकी रौशनी पाने का सुअवसर मिला...। उसे ऐसी लज्जा अनुभव हुई कि जिसे अनुभव करना उसके स्वभाव के विरुद्ध था। उसने पत्नी के सम्बन्ध में अपने बुरे व्यवहार को देखा। उसने अपने आप पर बहुत फिटकार डाली। परन्तु उसका दुर्भाग्य था कि वह इस ज्योति के स्त्रोत से दूर चला गया। वह फिर उसी प्रकार दुखी हो गया और अपनी पत्नी, अपने मित्रों और सारी दुनियां को उसने फिर से दोषी ठहरा दिया। अपने आपको बड़ी आसानी से उसने निर्दोष समझ लिया। वह बहुत अध्ययनशील है। मैंने उसे समझने का यत्न किया। परन्तु मेरा कुछ कहना कहां कारगर हो सकता था। आपकी ज्योति के उसके भीतर प्रवेश करने का कोई मार्ग नहीं रह गया था। उसका विशाल ज्ञान उसके किसी काम न आया। वह फिर अपनी पत्नी के सम्बन्ध में उसी प्रकार अपराधी है। उसका घरेलू जीवन दुखों का घर बना हुआ है। परन्तु उसे अब कुछ दिखाई नहीं देता। आह! आपकी ज्योति के बिना हम कितने बेबस हैं।

कदाचित हम आपकी ज्योति की महिमा देख सकें। व्यक्तियों और जातियों के हाथों यही ज्योति एकमात्र ऐसा शास्त्र है जो उन्हें उन नीच अनुरागों और नीच घृणाओं का भयानक रूप दिखा सकता है, जो उन पर शासन करते हैं, क्योंकि मनुष्य उसके अवश्य प्रेमक हैं। जिनके पास आपकी रोशनी की लालटेन है, वह सावधान रहकर सुरक्षित स्थान की ओर चलते जाएंगे, और नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से छुटकारा पाने का भरसक संग्राम करेंगे। वही आत्मा के जगत में आश्चर्य फल उत्पन्न कर सकेंगे और वही आपके सच्चे कर्मचारी होंगे। आपका मिशन उन लोगों के द्वारा अधिक सफलता से पूरा होगा, जो हल चलाने वाले हैं, परन्तु आपकी ज्योति से ज्योर्तिमान हैं, न कि उन ऊँचे दिमाग रखने वाले जनों के द्वारा कि जो आपकी ज्योति से विहीन हैं। इस कहलाने वाली शिक्षा पर से मेरा विश्वास उठता जा रहा है जो आत्मा के विषय में तनिक भी रौशनी नहीं दे सकती। मैं आपके द्वार से यही भिक्षा मांगता हूं कि मैं और अन्य मनुष्य आपकी अद्वितीय ज्योति और उसके अनुपम महत्त्व की कदर कर सकें, और उसको प्रतिदिन प्राप्त करना अपना कर्त्तव्य समझ सकें। रक्षा और विकास का यही एकमात्र उपाय है। मैं और अन्य जन आपका ऐसा आशीर्वाद पा सकें।

प. व. कनल

जीवन प्रसंग

प्रतिक्रियावादी बना देता है अंधविश्वास

विकास के इच्छुक लोगों को प्रचलित मत की हर बात को हर कोने से तर्क की कसौटी पर कसना होगा।

निरा विश्वास खतरनाक है क्योंकि यह मस्तिष्क को मूढ़ तथा मनुष्य को प्रतिक्रियावादी बना देता है। जो मनुष्य यथार्थवादी होने का दावा करता है उसे समस्त प्राचीन विश्वासों को चुनौती देनी होगी। यदि वे तर्क का प्रहार न सह सकें तो टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़ेंगे। तब उस व्यक्ति का पहला काम होगा, तमाम पुराने विश्वासों को धराशायी कर नए दर्शन की स्थापना के लिए जगह साफ करना। इसके बाद सही कार्य शुरू होगा, जिसमें पुनर्निर्माण के लिए पुराने विश्वासों की कुछ बातों का प्रयोग किया जा सकता है।

हमारी पुरानी विरासत के दो पक्ष होते हैं, एक सांस्कृतिक और दूसरा मिथिहासिक। मैं सांस्कृतिक गुणों, जैसे-निष्काम देशसेवा, बलिदान तथा विश्वासों पर अटल रहने को पूरी सच्चाई को अपनाकर आगे बढ़ने की कोशिश में हूं, लेकिन मिथिहासिक विचारों को, जोकि पुराने समय के अनुरूप हैं, वैसे का वैसा मानने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं हूं। विज्ञान ने ज्ञान में खूब बुद्धि की है और वैज्ञानिक विचार अपनाकर ही भविष्य की समस्याएं हल हो सकती हैं। एशियाई दर्शन को पढ़ने की मेरी बड़ी लालसा थी पर ऐसा करने का मुझे कोई अवसर नहीं मिला। विकास के लिए खड़े प्रत्येक मनुष्य को रूढ़िगत विश्वासों पर अविश्वास करना होगा। उन्हें चुनौती देनी होगी। प्रत्येक प्रचलित मत की हर बात को हर कोने से तर्क की कसौटी पर कसना होगा। विरोधियों द्वारा रखे गए तर्कों का सामना करने योग्य बनने के लिए अध्ययन करें। अपने मत के समर्थन में तर्क देने के लिए खूब पढ़ें। तर्क असत्य या छलावा और कभी-कभी मिथ्या भी हो सकता है लेकिन उसे सुधारा जा सकता है।

भगत सिंह

मुश्किलें तय कर देती आपका मोल

न्यूट रॉक्ने ने कहा था-'जब चलना कठिन होता है, तब भी जुझारू लोग चलते रहते है।' जब सड़क खराब हो, तो जुझारू लोग आगे आते हैं। वे जीतते हैं। वे डटे रहते हैं। वे शिखर पर पहुंच जाते हैं। लोग आलुओं की तरह होते हैं। जब आलुओं को बेचा जाता है, तो उन्हें अलग-अलग छांटा जाता है, ताकि अधिकतम बाजार मूल्य प्राप्त हो सके। उन्हें आकार के हिसाब से छांटा जाता है-बड़े, मध्यम और छोटे। छांटने के बाद ही आलुओं को बोरे में बंद किया जाता है और ट्रक में लादा जाता है। यही वह तरीका है जो एक गांव के निवासी सभी आलू उगाने वाले किसान अपनाते हैं, सिवाय एक के। एक किसान ने कभी आलू छांटने का कष्ट नहीं किया। परन्तु फिर भी वह सबसे अधिक धन कमाता था। एक परेशान पड़ोसी ने आखिरकार उससे पूछ ही लिया 'आपकी सफलता का रहस्य

क्या है?' उसने जवाब दिया - 'बहुत ही आसान है। मैं गाड़ी में आलू भर लेता हूँ और फिर शहर तक जाने वाली सबसे खराब सड़क पर चल देता हूं। आठ मील के इस रास्ते में सबसे छोटे आलू हमेशा सबसे नीचे पहुंच जाते हैं। मध्यम आकार के आलू बीच में रहते हैं, जबकि बड़े आलू सबसे ऊपर आ जाते हैं।' यह सिर्फ आलू के बोरे में ही सच नहीं है, यह तो जीवन का नियम है। बड़े आलू खराब सड़कों पर सबसे ऊपर पहुंचते हैं। संघर्ष करने वाले लोग मुशकिल समय में शिखर पर पहुंचते हैं। मुशकिलें हमेशा हारती हैं। संघर्ष करने वाले हमेशा जीतते हैं। संभावनापूर्ण चिंतन काम करता है। इसने मेरे पिता के लिए काम किया, इसने मेरे लिए काम किया और मैंने इसे उन स्त्री - पुरुषों के लिए काम करते देखा है, जिन्होंने इसके बारे में मुझसे सुना है। मैं इसका प्रचार करता हूं, इसे जीता हूँ।

रॉबर्ट एच. शुलर

माफ करना ही है असली बहादुरी

अगर आप दोस्तों को क्षमा नहीं करते, तो एक दिन ऐसा आएगा। जब आपका कोई दोस्त नहीं होगा। अगर आप व्यापारी हैं, आपके पास ग्राहक नहीं होंगे। मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जो उन गलत कार्यों को याद रखते हैं जो उनके साथ किए गए थे। कुछ लोग भूलते और क्षमा नहीं करते, यहां तक कि अपने मां - बाप को भी और कुछ माता - पिता भी बच्चों की गलतियों को नहीं भूलते और क्षमा नहीं करते। दया से भी भूलना और क्षमा करना संभव है। भूलने और क्षमा करने के लिए आपको अमीर होने की कोई जरूरत नहीं है परंतु आपको दानी बनना है और उस ढंग से सोचने के लिए परिपक्व होना है। बदला लेने की भावना आपको भूलने की आदत से अधिक जल्दी और यकीनन रूप से नुकसान देगी। इंग्रिड ब्रेगमैन ने कहा कि खुशी अच्छी सेहत और खराब याददाश्त में निहित है। एक खराब याददाश्त आपको क्षमा करने और भूलने के योग्य बनाने में मदद करती है। क्षमा करना ही खुशी है। क्षमा कीजिए और भूलिए। मगर हम साधारण चीजें नहीं करना चाहते। जैसे - जैसे हम अधिक सफल होते जा रहे हैं, अपने जीवन को अधिक जटिल बनाते जा रहे हैं। क्षमा करना और भूलना आपका अपना फैसला है और यह दूसरे निर्णयों को लेने की तरह ही है। कोई भी एक क्षण में फैसला कर सकता है, या फिर सालों तक हृदय वेदना सही जाए।

चुनाव आपका अपना है। कोई शक नहीं कि दूसरों को क्षमा करना मुश्किल है, परन्तु हरएक को हरएक लेन - देन का डेबिट और क्रेडिट का विश्लेषण करना चाहिए। मैं अपनी सौ हृदय वेदनाओं की बजाय उसे क्षमा करना पसंद करूंगा। जिसने मुझसे खराब व्यवहार किया है। आप अपने अच्छे कार्य कीजिए और उन्हें पानी या बालू पर लिखें। अगर दूसरा व्यक्ति पत्थर पर लिखता है तो आपके पास जीवन में आनंदित होने के लिए एक और कारण है।

प्रमोद बत्रा

चण्डीगढ़ में माता पिता व्रत

26 जनवरी शनिवार के दिन माता पिता के सम्बन्ध में विशेष साधन का दिन था। इसलिए खेड़ा साहिब के घर में 35 सैक्टर में एक विशेष सभा रखी गई। इसमें शामिल होने के लिए चण्डीगढ़ कोचिंग सैंटर के 50 के करीब नौजवान लड़के और लड़कियां, खेड़ा साहिब का परिवार, चमन जी और जगदीष जी का सारा परिवार, वशिष्ट जी अपने पुत्र समेत, पंचकूला से सुभाष जी अपने परिवार के साथ, सुरेश जी की पत्नी किरन मैडम, उनके भाई और पिता, श्रीमती सुरजीत जी, हरबंस जी परिवार सहित और ब्रिगेडियर साहिब दिल्ली से आकर शामिल हुए। सारा हाल खचाखच भरा हुआ था।

9.30 बजे सभा शुरू हुई, पहले श्रीमान दत्ता साहिब जी ने भजन का गान किया। पूजनीय भगवान का छवि द्वारा अर्चन किया गया, फिर जगदीष जी ने "श्रद्धा भाजन मात-पिता जी" नामक भजन का गान किया गया। उसके बाद सभापति जी ने अपना ब्यान आरम्भ किया।

उन्होंने बताया कि नेचर के विकास के क्रम में देवात्मा आद्वितीय शाक्तियां वा नई योग्यताएं लेकर आए हैं। उन्होंने दूसरे सब गुरूओं, पीरों, पैगम्बरों से नई बात की है। और नई राह दर्शाई है। उनकी सारी शिक्षा विज्ञान मूलक है और मानवता के हित के लिए है। और विशेषता यह है कि जहां दूसरे धर्म सम्बन्धों को जोड़ने वा त्यागने की शिक्षा देते हैं, वहाँ देवात्मा सम्बन्धों को जोड़ने, उन्हें मीठा वा स्वर्गिय और परस्पर सेवाकारी होकर एक दूसरे के विकास में भागीदारी करने की शिक्षा देते हैं, तभी धर्म आता है। उन्होंने 16 सम्बन्धों में शिक्षा दी है। 26 दिसम्बर से 26 जनवरी तक माता पिता सन्तान के सम्बन्ध में दिन रखे हैं, जिनकी आज यह आखिरी सभा है। सम्बन्धों को मिठास भरा कैसे बनाना है, उसके लिए उन्होंने फरमाया है कि मनुष्य सम्बन्धों में स्वार्थ के साथ जुड़ा हुआ है, जब तक स्वार्थ पूरा होता है, वह जुड़ा रहता है। स्वार्थ पूरा न हो तो वह सम्बन्ध शिथिल हो जाता है। औरंगजेब ने पिता से राज लेने के लिए उन्हें कैद कर लिया और उनके और बेटे का सिर काटकर उन्हें भेंट किया। यह धार्मिक शहनशाह की घटना है जो पांच बार नमाज़ पढ़ता था।

हरियाणा की सोनिया ने अपने पति के साथ मिलकर सम्पति प्राप्त करने के लिए अपने माता पिता भाई, भावजा, भतीजा, सारे परिवार को मार दिया। अब पति पत्नी दोनों को फांसी की सजा हो गई है। स्वार्थ से जुड़कर हमेशा नर्क की उत्पत्ति होती है। गुरु महाराज ने फरमाया है कि सम्बन्धों में उच्च भावों से जुड़ना, सन्मान, श्रद्धा भाव से जुड़ना है, हमदर्दी से जुड़ना है। उच्च भावों से जुड़कर स्वर्ग आता है, मनुष्य का विकास होता है। उच्च भावों को छोड़कर जो धर्म है, वह कूड़ा कर्कट ही है। देवात्मा मनुष्य को नीच भावों से निकालते हैं और उच्च भाव संचार करते हैं।

कंवर दविन्द्र सिंह जी की उच्च भाव वहीन अवस्था अर्थात उनकी नीच अवस्था में उच्च परिवर्तन और उनके पिता के प्रति बदली हुई तस्वीर का वर्णन किया। श्रीमती सवित्री सिद्धु जो Education Deptt. में उच्च पद पर थी, उनके माता के प्रति अति नीच अवस्था को बदल कर माता के लिए भक्ति भाव पैदा कर दिया।

फिर सभापति जी ने अपने जीवन में आए उच्च परिवर्तन का वर्णन किया, जिससे बहुत प्रभावदायक वातावरण पैदा हुआ। बहुत सारे हाजरीन आंसु बहा रहे थे। 4 - 5 बच्चों ने ज़ार - ज़ार रोते हुए अपने माता पिता की मेहरबानियों का, अपनी अविज्ञाओं का ब्यान किया और आगे से बताया कि वह माता पिता को दुख नहीं पहुंचाएंगे। उनका सत्कार वा सेवा करेंगे। नौजवान बच्चों का अपने माता पिता का सुन्दर रूप देखना और उनके प्रति हृदय का झुकना, उनके उपकारों की गाथा को रो - रोकर ब्यान करना, सब हृदयों को गहराई से छू रहा था, और सब जन पूजनीय भगवान के आगे झुक रहे थे।

उसके बाद बहुत सारे बच्चों ने अपने श्रद्धेय माता पिता को फूलों के हार पहनाए और उनके चरणों में प्रणाम किया। बहुत ही स्वर्गिय दृष्य पैदा हो रहा था। ऐसे प्रतीत होता था कि अन्धी और स्वार्थी दुनियां में जैसे स्वर्ग धरती पर उतर आया है।

समय काफी हो गया था, सभापति जी ने और ब्यान करने की इच्छा रखने वालों को लिखकर देने की प्रार्थना की।

365 रू० दान में प्राप्त हुए। अगले दिन ईतवार की सभा का ऐलान किया और चार बार जय ध्वनि करके यह प्रोग्राम पूरा किया।

एक हाजरीन

शोक समाचार

बहुत शोक औरप दु:ख का विषय है कि श्रीमती महिन्द्रा जी धर्म पत्नी श्रीमान गोकल चन्द जी गूना (M.P.) देव समाज की पुरानी सेविका का 17 फरवरी की बहुत सुबह दु:खदाई देहान्त हो गया है। वह काफी समय से बिमार थी।

महिन्द्र जी बहुत ही योग्य, सुहृदय और सेवाकारी महिला थी। वह बहुत मोह माया में फंसने से बची हुई थी। काफी देर से उन्होंने संगत में पति समेत डेरा लगा लिया था। वह केवल 57 - 58 वर्ष के लगभग थी।

ऐसी अच्छी और योग्य, सेवाकारी महिला के चला जाना बहुत ही शोक, घाटे और दुख की बात है।

हम श्रीमान गोकल चन्द जी और परिवार के साथ हृदयगत हमदर्दी का प्रकाश करते हैं। देह त्यागी की परलोक में सुरक्षा, सहायता और आत्मिक शान्ति की कामना करते हैं।

चण्डीगढ़ कोचिंग सेंटर में माता पिता दिवस

3 फरवरी 2008 को पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ के **Law auditorium** में एक बहुत ही विशेष कार्यक्रम सैक्टर 35-डी के डा. खेड़ा चंडीगढ़ कोचिंग सेंटर ने आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य हमारे समाज में माता-पिता और संतान के रिश्ते के बीच आने वाली दूरी को कम करना, इस रिश्ते को मीठा बनाना तथा माता-पिता के प्रति संतान में श्रद्धा भाव जगा कर उनको अपने माता-पिता के गुण देखने के योग्य बनाना था। माता-पिता के उपकारों, मेहरबानियों तथा त्यागों पर रोशनी डालने वाले **माता-पिता, संतान दिवस नाम** के इस समारोह में कोचिंग सेंटर के सैकड़ों बच्चे साम्मिलित हुए। पंजाब, हिमाचल प्रदेश एवं हरियाणा के दूर-दूर के शहरों और गांवों से इन **Students** के अभिभावक गण भी इस कार्यक्रम को सुशोभित करने पहुंचे।

माता-पिता को श्रद्धांजलि देते हुए कोचिंग सेंटर के छात्र-छात्राओं ने एक सामूहिक गीत प्रस्तुत किया जो इस प्रकार से था-

'माता-पिता की सेवा दिल से किया करेंगे, नक्शे कदम पर अपने गुरु के चला करेंगे।'

देव धर्म मिशन के सेक्रेटरी श्रीमान बलदेव सिंह जी इस समारोह में विशेष अतिथि थे। उन्होंने अपने बहुत प्रभावशाली भावों के साथ बच्चों में उनके माता-पिता के गुणों, कुर्बानियों और उनके स्नेह को समझने की आवश्यकता का एहसास करवाया। उन्होंने बच्चों को अपने माता-पिता के प्रति अपनी गल्तियों और मां-बाप को उनसे पहुंचने वाली तकलीफों का आभास करवाया। उनका मानना था कि हमारी बाहरी आंखें तो खुली है पर हम अपने माता-पिता के प्रति अंधे हो गए है। हमें अपनी फूटी आंख को ठीक करके और अपनी अंतरात्मा को जगा कर अपने माता-पिता के प्रति श्रद्धा और सेवाभाव को बढ़ाना होगा।

इसके बाद कोचिंग सेंटर के छात्र-छात्राओं ने श्रीमान जी द्वारा कही गई बातों को अपने अगले गीत में पिरो लिया, जिसके बोल इस प्रकार थे-

'बदला अदा कैसे करूं ऐ मां तेरे एहसान का,
सारी उम्र ऋणी रहूं मैं, मां तेरे उपकार का।'

इसके उपरांत कोचिंग सेंटर के छात्र राकेश ने एक मन को छू जाने वाला गीत गाया जिसके शब्द थे-

'कैसे माता और पिता के उपकार सुनाऊं मैं,
उनकी सेवा में ही तन, मन और धन लगाऊं मैं।'

समाज में फैल रही भौतिकतावाद की प्रवृति और पैसे के कारण मां-बाप पर अत्याचार करने का परिणाम हमेशा बुरा होता है। ऐसे ही विचारों से ओत-प्रोत था सेंटर के एक शिक्षक द्वारा निर्देशित देव धर्म की एक सच्ची कहानी पर आधारित नाटक 'मां'। आज हमारे जीवन में सबसे बड़ा स्थान धन ने ले लिया है जबकि

हमारा सबसे बड़ा धन हमारे माता-पिता, हमारे जन्म-दाता होते हैं। उन्हें हम वृद्धाश्रमों में छोड़ देते है जो भारतीय सभ्यता पर कलंक है। जब तक वे सबल थे, और हमारे काम आते थे तब तक हम उनका फायदा उठाते रहे, और जब वो वृद्ध एवं लाचार हो जाते है तब हम भी उन्हें ठोकर मार देते हैं। इससे बुरा कर्म तो हो ही नहीं सकता, ऐसी ही भावना से सजा था अगला सामूहिक गीत जिसके बोल थे-

'मां बाप का दिल ना तुम यूं दुखाओ,
बुरे कर्म करके ना उनको रुलाओ।'

मुख्य अतिथि, श्री आर.पी. चन्द्र आई.ए.एस भी इस समारोह से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने बड़े गर्व के साथ बताया कि वो एक मजदूर के पुत्र हैं और आज इतने बड़े अफसर बनने के बावजूद सदैव अपने आपको अपने माता-पिता का कर्जदार मानते हैं एवं अपने माता-पिता के साथ बहुत सम्मानपूर्वक रहते हैं। उन्होंने उपस्थित छात्र-छात्राओं को प्रेरित किया और डा. खेड़ा की विशेष सराहना की कि जोकि बच्चों में ऐसे अच्छे संस्कार पैदा करने का प्रशंसनीय काम कर रहे हैं और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ऐसे समारोह आयोजित करते हैं।

12वीं कक्षा की छात्रा चंदा ने अपने गीत से सभी को भाव-विभोर कर दिया और उपस्थित जनों में से कई व्यक्ति भाव-विभोर होकर रोते हुए नजर आ रहे थे। उनके गीत के बोल थे- "मां प्यारी मां, गोद में तेरी खेला बचपन मेरा।"

कई छात्र-छात्राओं ने अपने सहपाठियों एवं अभिभावक गण के सामने अपनी गल्तियों और उनकी कुर्बानियों का वर्णन किया और अपनी गल्तियों का पश्चाताप भी किया।

समारोह का मुख्य आकर्षण, जिसने सभी की आंखे नम कर दी, वो हिस्सा था जब सैकड़ों माता-पिताओं को उनकी संतानों ने श्रद्धापूर्वक फूलों के हार पहनाए और उनके चरणों में नत-मस्तक हुए। सारा हाल इस सुन्दर क्षण में भाव-विभोर हो उठा। माता-पिता भी अपनी संतान के इस श्रद्धा भाव से गद-गद हो उठे, लगभग सभी की आंखों में आंसू थे।

डा. खेड़ा ने बच्चों को बताया कि वे क्यों ऐसे कार्यक्रमों का आयोजित करते हैं। उनके गुरु परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने अपने देव जीवन से अपने माता-पिता के सम्बंध में हमारे लिए ऐसे आदर्श प्रस्तुत किए हैं कि जिनकी प्रेरणा ही ऐसे कार्यक्रमों का मुख्य स्रोत है। भगवान देवात्मा ने सदैव अपने माता-पिता के लिए अनोखा सम्मान और श्रद्धा के भावों का प्रदर्शन किया है और उनके प्रति देव कृतज्ञता से ओत-प्रोत रहे हैं। उन्हीं की शिक्षा का असर है कि मेरा ध्यान ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने की ओर जाता है। डा. खेड़ा ने कहा कि अपने माता-पिता के एहसानों को कभी न भूलकर हमें हमेशा उनके प्रति कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। सभी बच्चे, अभिभावक गण और मुख्य अतिथि इस प्रेरणाशील समारोह से प्रभावित हुए और उसकी सराहना की।

अंत में मुख्य अतिथि महोदय को सम्मानित किया गया। जिन छात्र-छात्राओं ने अपनी पढ़ाई

के समय से, समय निकालकर इस समारोह की तैयारी की तथा भाग लिया, उन्हें भी प्रोत्साहित किया गया तथा पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में कार्यक्रम में योगदान डालने वाले सभी जनों का धन्यवाद किया गया। विशेषकर बच्चों को संगीत सिखाने वाले श्री राठौर जी जिन्होंने हाल में ही अपना पुत्र खोया था, और ऐसी दुखदाई अवस्था में भी अपने ऐसे दु:ख से ऊपर उठकर, जिस प्रकार वह बच्चों का गीतों में मार्गदर्शन करने आते रहे उसको सम्मुख लाकर सभी उपस्थित जनों ने उनके ऐसे शानदार उदाहरणार्थ कदम के लिए खड़े होकर तालियों की गूंज से सराहना की।



कल्याण सत्संग

पिछले तीस वर्षों की तरह इस वर्ष भी कल्याण मल्लेका जिला भटिंडा में विशेष सत्संग और माता पिता दिवस की सभाएं 7 फरवरी रात से 10 फरवरी दोपहर तक रखी गई। इस प्रोग्राम में शामिल होने के लिए 60 के लगभग पत्र धर्म सम्बन्धियों को लिखे गए। बहुत सारे फोन भी किए गए। श्रीमान बलदेव सिंह जी 6 फरवरी को ही चण्डीगढ़ से रवाना हो गए। सर्वप्रथम वह समराले श्री नायब सिंह जी के पास पहुँचे। कुछ घण्टे रुककर उन्हें सत्संग के लिए प्रेरणा देकर श्रीमान जी लुधियाना पहुंचे। वहां श्रीमान जगजीत सिंह जी और श्रीमान जसवीर सिंह जी को मिले। वहां भी कुछ घण्टे ठहरे। उनको भी कल्याण सत्संग के लिए प्रेरणा की और स्थानिय सेवकों को पता देने के लिए कहा। ईतवार की सभाएं रखने के लिए उत्साहित किया। इसके बाद श्रीमान जी मोगा में श्रीमान अवतार सिंह जी के पास पहुंचे। वहां रात को सभा की गई। अगली सुबह श्रीमान जी दारापुर पहुंचे और श्रीमान जय सिंह जी और उनके परिवार को मिले। वहां से श्रीमान जी फरीदकोट पहुंचे। वहां अपने एक अज़ीज को मिले। उसे पढ़ने को दो पुस्तकें दी। वहां से श्रीमान जी अपने पुराने गांव चक्क कल्याण पहुंचे। वहां अपने सगे सम्बन्धियों को मिलकर श्रीमान जी कल्याण पहुंचे।

इस सत्संग का गांव वासियों को पहले ही पता दिया गया था। इसलिए साधन स्थान की सफाई वा यात्रियों को ठहराने और खाने आदि का प्रबन्ध वा तैयारियाँ में पहले से बलबहादुर सिंह जी, मास्टर तेजराम जी के परिवारिक जन, श्रीमान बलजीत सिंह जी, बूटा सिंह जी, श्री सुरजीत सिंह जी आदि बहुत सेवाकारी होते रहे।

7 फरवरी को सुबह यात्री आने शुरू हो गए। लुधियाना, देहरादून, खतौली, मेरठ, दिल्ली, चण्डीगढ़, मोगा, घोलु वाला, गंगा नगर, गोनियाना, गुजरात से 18 - 20 जन शाम तक पहुंच गए। सब सेवकों और श्रद्धवानों को लेकर रात को एक सभा की गई।

यात्रियों के लिए निकट के स्थान पर ही प्रबन्ध किया गया। इसमें तेज राम जी का परिवार बहुत सेवाकारी होता।

8 फरवरी की शाम को मोगा से, मल्लेका वा केसूपुरा से 16 - 17 जन, पदमपुर से पार्टी, जगदीष जी और उनके सपुत्र विनय जी चण्डीगढ़ से, गोनियाना, महिमा सेवाई, यमुनानगर, संगरूर आदि से कुछ जन पहुंच गए। कोठागुरू से एक परिवार श्रीमान अवतार सिंह जी का रिश्तेदार आकर लाभ उठाता रहा। मानसा से श्री मनोज शर्मा जी भी आ गए। आखरी सभा में गोनियाना मण्डी से कुलदीप जी 3 - 4 और जनों को लेकर पहुंचे। इस प्रकार 60 - 65 जन बाहर से पहुँच गए थे।

सबके नाश्ते, खाने वा ठहरने का अच्छा प्रबन्ध किया गया। आखरी दिन के 70 - 80 सुन्दर हार भी मंगलवाए गाए। यात्री हर प्रकार से सन्तुष्ट रहे।

भजनों का गान श्रीमान जगदीष जी करते रहे, ओम प्रकाश जी भी अपने बनाए भजन भेंट करते रहे। बहुत सर्दी के बावजूद सारा प्रोग्राम निर्विघ्न पूरा हुआ। बहुत सुन्दर वातावरण बनता रहा। सबने सभाओं से लाभ उठाया। सभाओं में हाजरीन के दिल पिघलते रहे। पूजनीय भगवान को धन्यवाद देने के लिए कई जन सजदा करने के लिए मजबूर होते रहे। एक जन ने 6 महीने के लिए शराब मांस छोड़ा। एक सेवक ने चाय छोड़ी। एक जन 3000 रू० का परिशोध करने के लिए तैयार हो गए। एक जन ने सत्संग रखने की प्रेरणा हासिल की। सबने उच्च उत्साह प्राप्त किया। इस सत्संग की कुल 7 सभाएं हुई। उनका संक्षेप वृतान्त नीचे दिया जा रहा है :-

पहली सभा :- 7.2.08 रात 8 बजे। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें शामिल होने के लिए जैसे पहले लिखा है कई स्थानों से यात्री पहुंच गए थे। कई स्थानिय साथी सेवक भी सभा में आए। इसमें यह सच्चाई बताई गई कि विश्व के दो रूप हैं एक स्थूल और एक सूक्ष्म। साधारणत: मनुष्य को विश्व का स्थूल रूप ही दिखाई देता है। विश्व में जितनी भी शक्तियां हैं, वह सूक्ष्म रूप रखती हैं। इनका कारज बहुत व्यापक है। जिस प्रकार बिजली द्वारा कितनी प्रकार के काम हो रहे हैं, परन्तु शक्ति नज़र नहीं आती। इसी प्रकार देवात्मा ने शिक्षा दी है कि विश्व में प्रत्येक अस्तित्व अपने असर छोड़ता है और ग्रहण भी करता है। इन दोनों गतियों द्वारा उनके भीतर लगातार परिवर्तन जारी है। हम भी चुपचाप असर पाकर बुरे बन जाते हैं, परन्तु पता नहीं लगता। देवात्मा के देव प्रभाव जो अति सूक्ष्म हैं, उनके द्वारा मनुष्यों में परिवर्तन आ रहा है और शुभ परिवर्तन आ रहा है। इसकी महिमा गाई नहीं जा सकती। यह महिमा सभा में पेश की गई।

8.2.08 सुबह 10.00 बजे :- यह सभा भी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया गया कि इन्सान बहुत सुन्दर अक्ल वा दिमाग का मालिक है, इसके द्वारा उसने अथाह ज्ञान प्राप्त किया है, पर साथ ही यह भी सत्य है कि विश्व के चारों जगतों में ऐसे अस्तित्व हैं जो हितकर और कीमती हैं, परन्तु उनकी पहचान हमें नहीं है और

नहीं हो सकती। श्रीमान जी ने भौतिक पदार्थों, कई प्रकार के पौधों वा जानवरों के उदाहरण देकर इस सच्चाई को सिद्ध किया। मानव समाज में बहुत से महापुरुष हुए हैं, परन्तु उस समय की मानवता उन्हें पहचान नहीं सकी। एन्सटाईन को दो चार व्यक्तियों ने ही देखा और जाना। गुरू नानक जी को आज अथाह श्रद्धा से याद किया जाता है, परन्तु उनके समकालीन जनों ने न जाना और न पहचाना। उनको बेताला वा बुरे मार्ग पर चलने वाला कहा गया। परन्तु भाई लहिणा जी ने पहचाना। अपनी श्रद्धा की आंख रखकर वह भाई अंगद देव जी बन गए। हमने भी देवात्मा को नहीं पहचाना। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने पहचाना परन्तु फिर भी वह पुकार उठे कि "मैंने तुम को नहीं पहचाना" फिर हम तुच्छ और नीच आत्माओं का तो क्या हाल है? यह सभा बहुत प्रभावशाली सभा थी।

शाम 8 बजे :- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई, इसमें मल्लेका, केसूपुरा, पदमपुर, राजस्थान, चण्डीगढ़, मोगा, गुजरात आदि स्थानों से 30-35 जन और आ गए। गुजरात वाले तेज राम जी के कई और सम्बन्धी भी रणीयां से पहुंचे। गोनियाना, महिमा सवाई से भी कई जन पहुंचे। हाल खचाखच भर गया। श्रीमान जगदीष प्रसाद जी भी पुत्र समेत पहुंचे। हरबंस सिंह जी के परिवारिक जन भी शामिल हुए।

सभापति जी ने बताया कि समाज में मनुष्य के लिए एक हितकर अंग बनने के लिए दिमाग के भिन्न उच्च भावों को पैदा करना भी अवश्यक है। श्रद्धा की आंख के बिना महान व्यक्ति छुपे रहते हैं। शुकरगुजारी के बिना उपकारियों का ऋण नज़र नहीं आता, उसे उभारने का यत्न तो क्या करना था। मां के पहाड़ जितने उपकार भी नज़र नहीं आते। श्रद्धा के बिना महान रूप छुपा रहता है। कोई-कोई इस रूप को देख सकता है, वह कमाल के Tribute देता है। परन्तु अधिकतर लोग श्रद्धा और कृतज्ञता वहीन हैं, उनके द्वारा ऐसे वजूद का घोर निरादर वा अपमान होता है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा अपने देव प्रभाव पहुंचाकर, इन्सान के भीतर उच्च भाव जाग्रित करते हैं, उसको समाज का हितकर अंग बनाते हैं। इस सभा ने भी दिलों को बहुत प्रभावित किया।

9.02.08 सुबह 10 बजे :- यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया गया कि नेक बनने का नाम ही धर्म है। जैसे हलवा बनाने के लिए कई पदार्थों की अवश्यकता होती है, उसी प्रकार नेक बनने के लिए उच्च भावों की अवश्यकता होती है। श्रद्धा के बिना अच्छे और नेक इन्सान की पहचान भी नहीं होती। कृतज्ञता के बिना इन्सान बनना तो क्या, मनुष्य बहुत घटीया या पिशाच बन जाता है। देवात्मा ने फरमाया है कि जो जन उपकार पाकर प्रति उपकार नहीं करता, वह हमारे निकट खुदगर्ज, कमीना वा पापी कहलाता है। श्रीमान जी ने कृतज्ञता के बहुत सुन्दर वा दिल को हिला देने वाले उदाहरण पेश किए, कृतज्ञता के उदाहरण सुनकर कई जन पवित्र आंसू बहाने के लिए मजबूर थे। ऐसे लग रहा था कि यह दृष्य फरिश्तों के देखने योग्य था।

इस समय गांव वालों ने खून दान करने

को एक कैंप लगाया, जिसमें धर्म सम्बन्धियों ने खुशी-खुशी खून दान करके अपना भला किया।

शाम 4 बजे :- यह सभा भी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें श्रीमान जी ने मनुष्य के प्रतिदिन, प्रतिक्षण परिवर्तित होने के अटल नियम के विषय में बताया। जो जन नियमित रूप से देवात्मा के देव प्रभाव पाने का यत्न करते हैं, उनका जीवन हरा भरा रहता है। परन्तु अधिकतर सेवकों में कुछ समय के बाद उच्च परिवर्तन के रुक जाने से उनका उत्साह वा संग्राम घट जाता है और विकास रुक जाता है। हमारे लिए यह अवश्यक है कि इस पक्ष में जाग्रित रहें और देखें कि हमारा उत्साह घट तो नहीं रहा और हम कठोर तो नहीं बन रहे। हम गुरु से बेमुख न हो जाएं, उल्टा दृष्टा न बन जाएं। बहुत हितकर प्रभाव कई जन अनुभव कर रहे थे। तेजराम जी और उनके परिवारिक जनों ने बहुत उत्साह से सेवा की। श्रीमान बलजीत सिंह जी और उनके परिवारिक जन, श्रीमान बूटा सिंह जी भी सेवा में लगे रहे। यह सारा दृष्य बहुत अच्छा मण्डल पैदा कर रहा था।

रात 8.00 बजे :- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। सभा में बताया गया कि मनुष्य जो कुछ चाहता है, उसके अनुसार कर्म नहीं करता, इसलिए उसकी इच्छाएं अकारथ जाती हैं। वह सुख चाहता है, पर उसे दुख मिलता है। सन्मान चाहता है, पर अपमान मिलता है। वह सुख का प्रेमक है, परन्तु सुख प्राप्त करते करते दुखों को प्राप्त होता जाता है और विनाश की ओर बढ़ जाता है। मानव प्रकृति सुख परायण है। मनुष्य के जीवन की सारी लीला सुख प्रेम की लीला है। देवात्मा सत्गुरू, मनुष्य का यह रूप रोशन करते हैं और वह अपने प्रभावों के द्वारा उच्च परिवर्तन पैदा करके ऐसा रूप प्रदान करते है, जिससे मनुष्य अनुचित दुखों से बच जाता है, उचित सुखों का वारिस बन जाता है। यह सभा काफी प्रभावशाली थी।

10.2.08 सुबह 9 बजे :- यह माता पिता सन्तान व्रत की विशेष सभा थी। देव स्तोत्र वा उसकी व्याख्या के बाद सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने परम पूजनीय भगवान के हजूर में हृदयगत आर्शीवाद प्रार्थना की। इसके बाद श्रीमान जगदीष प्रसाद जी कुक्कड़ ने साथियों के साथ मिलकर यह भजन गाया, "श्रद्धा भाजन मात-पिता जी, श्रद्धाभाव करूं उपहार" सभापति जी ने बताया कि मनुष्य का विकास पशु जगत से हुआ है, अभी बहुत सारा वही स्वभाव मनुष्य के भीतर है। बहुत से पक्षों में विकास करके भी मनुष्य का यह पशुपन बाकी है कि जैसे पशु अपने सम्बन्धियों से कोई सम्बन्ध अनुभव नहीं करता, उसी प्रकार स्वार्थ के बिना मनुष्य भी सम्बन्ध अनुभव नहीं करता। मनुष्य को सम्बन्धों में जीना नहीं आता। औरंगजेब की इस विषय में बहुत घिनौनी उदाहरण है। अपने दाताओं को न देखना बड़ी कृपा पात्र अवस्था है। कुर्बानी वा त्याग की तस्वीर हैं माता पिता, जो बच्चों के लिए जान की बाजी लगा देते हैं, लिंकन ने कहा है, "कि मैं जो कुछ हूँ और जो कुछ बनने की आशा करता हूँ, वह सब मैं अपनी कृपालु मां के कारण हूँ।"

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने श्रीमान

गुरूवन्त सिंह जी को अपनी सेवा से हटाकर, उनके पिता की सेवा में भेज दिया, इस घटना का वर्णन किया। माता पिता का हमारे ऊपर शरीर देने, अक्ल शक्ल देने का कर्जा है। माता पिता के महान उपकारी रूप का वर्णन किया गया। मनुष्य बेहद स्वार्थी है। जिससे जितनी अधिक सेवा पाता है, उसको सबसे अधिक दुखी करता है। मनुष्य की स्वभाव पागल कुत्ते की तरह है। मनुष्य के नीच, स्वार्थी वा नाशुकरे रूप को पेश किया गया और देवात्मा के प्रभावों को पाकर अदना मनुष्य किस प्रकार माता पिता की नेक सन्तान बन जाता है, उसके उदाहरण पेश किए गए। बहुत प्रभाव दायक वातावरण बना। कई हृदय बिलखते हुए नजर आ रहे थे। बहुत सारे जन धन्यवाद सहित देवात्मा के दर पर नतमस्तक हो रहे थे कि देवात्मा के सम्बन्ध ने राक्षसी जीवों को बदल कर क्या से क्या बना दिया है।

यह सभा 3 घण्टे तक चली, इस दौरान उपस्थित जनों ने क्या अनुभव किया, उसका ब्यान करने को कहा गया।

भाव प्रकाश

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :- जब आई. जी. साहिब की यह घटना सुनाई कि वह किस प्रकार अपने 6 फुट लम्बे पुत्र को पीठ पर उठाकर पी. जी. आई. के अन्दर काफी दूर तक बहुत कठिनाई से लेकर गए, तो मेरे सामने आया कि मेरे पिता जी ने मेरे भाई के ईलाज के लिए एक किसान के घर रहकर नौकर की तरह काम किया और प्रसिद्ध हड्डीयों के डाक्टर करम सिंह जी के घर भी नौकरों की तरह काम किया और उनकी सेवा की कि किसी तरह मेरे बच्चे की सेहत ठीक हो जाये। हम ऐसे पिता के एहसानों का क्या बदला दे सकते हैं।

मेरे दादा जी के लिए मेरे पिता जी बेहद श्रद्धा रखते थे, उन्होंने 12 जमात के बाद मेरी पढ़ाई बन्द करने के लिए पिता जी को बहुत ज़ोर दिया, परन्तु उन्होंने मुझे पढ़ने से नहीं हटाया। बहुत खुले दिल से खर्च दिया। परन्तु मैं उस पैसे को बेदर्दी से लुटाता रहा। परन्तु उन्होंने फिर भी पढ़ाया। माता पिता कुर्बानी वा उदारता की मूर्ति हैं, उन्होंने हमारे लिए खून, पसीने के दरिया बहाए हैं, वह अब याद आ रहे हैं। उनके उपकारों का बदला दिया नहीं जा सकता। इसी प्रकार माता जी जब तक चल फिर सकती थी, हमारे लिए कुर्बान होती रही। अब बिस्तर पर पड़े-पड़े भी हमारा फिकर करती हैं। हम अन्धे उसकी बेकदरी करते हैं। गुरू महाराज ने हम राक्षसों को बचाया है। हम अन्धों को थोड़ा बहुत माता पिता का रूप दिखाया है। माता पिता के लिए कुछ न कुछ करने का जज़बा दिया है। हम खुदगर्ज, कमीने और पापी हैं। माता पिता का अपमान करते थे। नाशकुरे, कृतघन थे। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने उनका फरिश्ता रूप दिखाया है। उनके चरणों में गिरा दिया हैं। उनकी सुन्दर वा प्यारी छवि दिखाई है। हमारी गन्दी जुबान बन्द कर दी है। माता पिता का अति सुन्दर संसार हमारे से छुपा रहता है, सूरों को गन्दगी की दलदल से निकाला है।

पिता जी का अपने श्रद्धेय पिता, अपनी

सास, पत्नी और बच्चों के लिए सेवाकारी रूप सुन्दर दृष्यों से भरा हुआ है। कई गरीब जनों की सेवा और हमदर्दी की उनकी घटनाएं हैं, उसका सुन्दर नज़ारा सामने आ रहा है। मैं बहुत सौभाग्यवान हूँ कि गुरू ने मुझे आंखे दे दी, जो यह सब कुछ नज़र आ रहा है। मेरे श्रद्धेय माता जी अपनी बड़ी बहन के बहुत निकट रहीं, कभी कोई लड़ाई नहीं की। सदा प्यार किया, कभी उनकी निन्दा नहीं की। मुझे बड़ा गर्व है ऐसे माता पिता पर। मेरे माता जी ने उनके पिता के चाहने पर भी उनकी जायदाद से कुछ नहीं लिया। जरूरत-मन्दों को दिलवा दी। मैं कृतघ्न पुत्र रहा हूँ। माँ को डाटां है और पागल बना हूँ, सत्गुरू! हम तो बहुत हिंसक है, चीर-फाड़ कर खा जाने वाले बघियाड़ थे, आपके दुर्लभ देव प्रभावों ने अमृत वर्षा की है, और अधिक से अधिक यह अमृत वर्षा हो।

श्रीमान ओम प्रकाश जी आदर्श :- मुझे बेहद गर्व और खुशी है कि मैं इस सभा में शामिल हूँ। बहुत प्रभावित होकर जा रहा हूँ। (एक गीत गाकर उन्होंने अपने भावों का प्रकाश किया।)

श्रीमान जगीर सिंह जी केसूपुरा :- मैं एक बिगड़ा हुआ, पशु से भी निकृष्ट इन्सान हूँ। माता पिता बिल्कुल दिखाई नहीं देते थे। अब उनका उपकारी रूप नज़र आने लगा है। माता, पिता, ताया जी, ताई, जी, दादा जी, दादी जी के उपकार नज़र आए हैं। इसी स्थान पर यह नादर पढ़ाई करवाई जाती है। मैं पशु था, माता पिता को कुछ नहीं जानता था। माता पिता की उच्च हस्ती का और रूप नज़र आया है। मैं पिता जी से लड़ाई करके रूठ गया। घर से निकल कर चला गया। माता ढूंड कर मुझे मनाने आई, पर मैं और दूर भाग गया। मां को बहुत सताया। बाप से झगड़ा करता था, गल्त बोलता था, कसाई बना फिरता था। गुरू महाराज ने दिखाया है। गल्तियाँ कम होने लगी हैं। कुछ सेवा भी करता हूँ। पिता के अंकुश ने मुझे बर्बाद होने से बचाया। मेरी बहुत रक्षा की। पिता जी ने दादा जी की बहुत सेवा की। यदि यह दर न मिलता, तो मैं तो पागल ही रहता। पिता जी का हमारे लिए खेतों में काम करना अब नज़र आता है। मेरा भाई लक्षमण है। बहुत सेवा करता है। भाई ने भी शराब, मांसाहार और मिथ्या छोड़ दी है। हम दोनों मिलकर माता की सेवा करते हैं। मेरी पत्नी और भावजा माता को स्नान करवाती हैं, वह भी उपकारी महसूस होती हैं। आह! मैं उपकारियों को ही सताता था और दूरी पैदा करता था, अब बहुत कुछ बचा हूँ।

गुरूदेव राज जी केसूपुरा :- मैं स्वयं नाशुकरा बेटा तुम्हारे सामने खड़ा हूँ। माता पिता ने पाकिस्तान से आकर किस प्रकार दिहाड़ीयां की, हमारी पालना की। जमीन, जायदाद बना दी। धूप, सर्दी, गर्मी की परवाह नहीं की। लोगों की खेती कर-कर के हमें पाला (फूट-फूट कर रोते हुए) मैं पिता जी को गन्दी जुबान के तीर मारने वाला था। उन तीरों से ही पिता जी को मार देता। श्रीमान जीत सिंह जी ने मुझे बहुत सम्भाला। पिता जी के साथ बुरे स्लूक करने से रोका। यदि यह दर न मिलता तो स्वयं मरने और उन्हें भी मारने वाला बन जाता। अब माता पिता का रूप सामने आकर झुकाता है। मुझे भी साफ नज़र आता है कि मैं खुदगर्ज,

कमीना वा पापी वजूद हूँ। माता का रूप अधिक से अधिक देख सकूं और इस दर से और लाभ उठा सकूं।

मास्टर तेज राम जी शर्मा (गुजरात):- गुरू महाराज ने उपकारी दिखा दिए। मैं उपकार पाके भी कोई उपकारी नहीं देख सकता था। मैं बचपन से ही देव समाज में आ गया, नहीं तो बहुत गुस्ताख़ वा उदण्ड बन जाता। आज नज़र आया है कि मां को घर से जाकर बहुत दुखी किया। आधी-आधी रात तक घर नहीं आता था, मां रसोई में बैठी दिवार के साथ लगी सो जाती, बहुत दुखी किया, देवात्मा ने हमें क्रियाशील बना दिया। मेरे बच्चे सभा में शामिल हैं, उन्हें प्रणाम करना सिखाया हैं, ऊंचा न बोलना गुरू की कृपा से सिखाया है।

नरेन्द्र दत जी धीमान :- एक सभा में बताया गया कि एक मां अपने साधु-पुत्र को बहुत दूर से मिलने आई, परन्तु बेटा उसे नहीं मिला। मैं भी साधु बना, मां फल और सौगातें लेकर आई। मां का सन्मान तो क्या करना था, उन्हें मारा और वहां से भगा दिया। ओह! मिथ्या विश्वासों का किस कदर अनर्थ! शोक! फिर मुझे मां को देखने का अवसर ही नहीं मिला।

समय काफी हो गया था। सभापति जी ने सौभाग्यवान सन्तान को अपने-अपने माता पिता का अर्चन करने के लिए कहा। 70-80 नौजवान बच्चों ने माता पिता के गलों में हार डालकर प्रणाम का साधन किया। बड़ा ही स्वर्गिय दृष्य था। सब धन्य-धन्य हो रहे थे।

लंगर के लिए 7000 रू० के करीब दान मिला। चार बार जय ध्वनि करके सभा समाप्त हुई। 2-3 नये अख़बार जारी हुए और हाजरीन ने अपने-अपने स्थानों को प्रस्थान किया।

एक हाजरीन

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160022*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts